आभार : डा. देश दीपक.

kissekahani.com

कहानी

एक वोट की कसर

दादाजी जब भी बच्चोंके विरुद्ध कोई कदम उठाते, तीनों बच्चे आपसी झगड़े भूलकर एक हो जाते जैसे पिछले चुनावके बाद कुछ राज्योंमें कांग्रेसी मंत्रिमंडल न बनने देनेके लिए सारे विरोधी दल एक हो गए हैं। तीनोंके मिले-जुले शोरमें दादाजीकी धीमीसी आवाज भी दब जाती थी। दादाजीने भी समझ लिया कि जमाना वोटोंका है। बहुमतके आगे अनुभवकी कोई पूछ नहीं। यदि बच्चोंका आधा वोट ही मान लिया जाए, तो भी तीन बच्चोंके डेढ़ वोट हो जाते थे और उनके मुकाबले दादाजीका एक वोट हलका पड़ जाता था। इसलिए उन्होंने सोचा कि यदि तीनमें से एकको फोड़कर वह अपनी तरफ कर लें, तब बाकी बच रहे दो बच्चोंपर अपना पूरा रोब जमा सकेंगे।

दादाजी काफी देर सोचते रहे कि किस बच्चेको अपनी ओर मिलाया जाए। काफी आगा-पीछाके बाद उन्होंने तय किया कि पिंकी ही इस कामके लिए ठीक रहेगी। उनके विचारसे वह पहले ही काफी सुधरी हुई थी। दादाजीने पिंकीको अपनी ओर मिलानेके लिए एक योजना बनाई और फिर स्वयं ही उसमें फेर-बदल करते रहे।

गर्मियोंके दिन थे। मम्मी और डैडी छतपर सोते थे। बच्चोंकी तीन छोटी चारपाइयां

और दादाजीका पलंग मम्मी खुले मैदानमें बिछा देती थी। आज मम्मी बिस्तर लगाने लगी, तो खांसते हुए दादाजी आए और बोले :

"बहूरानी, आज मेरा पलंग सहनमें दूसरी ओर बिछा दो। मैं बच्चोंके पास नहीं सोऊंगा।"

"क्यों, पिताजी? बच्चे परेशान करते हैं क्या?" मम्मीने चौंककर पूछा।

"अरे नहीं, भई, दरअसल जब कोई बड़ा आदमी पास हो, तो बच्चे अपने मनकी बातें खुलकर नहीं कर पाते। इससे उनकी बुद्धिका विकास रुक जाता है।" दादाजीने किसी मनोवैज्ञानिकसी तरह कहा।

इसपर मम्मीने सहनमें एक तरफ दादाजी-

का पलंग बिछा दिया और दूसरी तरफ बच्चोंके तीन बिस्तर लगा दिए।

दादाजी बिस्तर लगवाकर पूजाके कमरेमें चले गए, उधर बच्चे सोनेके लिए आ धमके। दादाजीका पलंग दूर अलग बिछा हुआ देखकर वे चौंके।

"दादाजी शायद हमसे नाराज हो गए हैं।" पिंकीने कहा।

"नाराज होने वाली बात तो हमने कोई नहीं की। मुझे तो कुछ दालमें काला लगता है। आज कोई बात जरूर होकर रहेगी।" राजूने अंदाजा लगाया।

"देखेंगे," कहता हुआ मुन्नू अपनी चारपाईपर जा कूदा। पिंकी और राजू भी अपने अपने बिस्तरोंमें आ जमे। तीनों बातें करने लगे। बात शुरू हुई स्टीलकी स्लेटसे और जा पहुंची स्टीलके पैटन टैंकपर। फिर उनमें यह बहस छिड़ गई कि टैंक मंहगा आता है या लड़ाकू जहाज। इसका कुछ फैसला होनेसे पहले ही दादाजी आ गए और पास खड़े होकर बोले :

"बच्चो, तुम स्कूलसे कितने बजे आए थे?"

"दो बजे," सब एक साथ बोले।

"अब दस बजे हैं। इन आठ घंटोंमें तुम लोग कितना पढ़े, कितना खेले?"

"मैं पांच घंटे पढ़ा, तीन घंटे दूसरे काम किए," राजूने कहा।

"मैं पांच घंटे पांच मिनिट पढ़ा, दो घंटे पचपन मिनिट दूसरे काम किए," मुन्नूने उत्तर दिया।

"क्या तू घड़ीपर नजर जमाकर पढ़ रहा था जो मिनिट मिनिटका हिसाब रखे हुए है?" दादाजीने डपटा।

"मुझे पहले ही पता था, आज आप यह पूछेंगे!" मुन्नूने कहा।

तीनों हंसने लगे।

"पिंकी, तुम?" दादाजीने कुछ देर बाद पूछा।

"मैं तो कुल दो-ढाई घंटे पढ़ी, दादाजी।" पिंकीने कहा।

दादाजी पल भरके लिए तो सन्न खड़े रह गए। वे सोचते थे—पिंकी कमसे कम छह घंटे पढ़ाईके बोलेगी। दादाजीकी सारी योजना ठप्प हो गई। तीन मिनिट उन्होंने नए सिरेसे सोचा, फिर एकाएक बोले, "शाबाश, पिंकी बिटिया! इसका मतलब है, जो काम इन दो सप्ताह पांच घंटोंमें किया, तुमने झटपट दो घंटेमें पूरा कर दिया। गुड, वेरी गुड! आज हम बेकार बुरे ही एक कहानी सुनाएंगे। चलो हमारे साथ ऊपर।"

राजू और मुन्नू हैरतसे एक-दूसरेका मुंह देखने लगे। उन्हें दादाजीकी कहानीका इतना शौक नहीं था। पर अकेली पिंकीको अलग ले जाकर दादाजी कोई भेदकी बात न उगलवा लें, यह डर उनके दिलमें समाया हुआ था। पिंकी चलने

Scanned by CamScanner

लगी, तो राजूने धीरेसे उसके कानमें कहा, "प्रिय बहन, कहीं किसी बातपर हमें फंसा न देना!"

दादाजी बिस्तरपर आकर लेटे । साथ ही पिंकी लेट गई । दादाजीकी समझमें न आया कि कैसे बात शुरू करें । पिंकीने कहा, "दादाजी, कहानी सुनाइए न?"

"कहानी बादमें, पहले मैं तुम्हें कुछ 'जनरल नॉलेज' की बातें बताऊंगा । अच्छा, यह तो बताओ, मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं?"

"जितने आसमानमें तारे!" पिंकीने कहा ।

"नहीं ।"

"तो फिर?"

दादाजी सोचकर बोले, "उतना, जितने भारतवर्षमें लोग हैं ।"

पिंकी हंसने लगी, तो दादाजीने समझाया, "हंसनेकी बात नहीं है, पहले मैं भी सोचता था कि आसमानमें असंख्य तारे हैं । पर कल ही मैंने किसी किताबमें पढ़ा है कि साफ और खिली रातको भी हम केवल दस हजार तारे देख सकते हैं जबकि भारतमें पचास करोड़ आदमी हैं ।"

"दादाजी, भारतमें पचास करोड़ आदमी हैं!" पिंकीने इस तरह हैरान होकर पूछा जैसे दादाजी कोई बिल्कुल नई बात बता रहे हों ।

"हां, और एक करोड़ हर वर्ष बढ़ जाते हैं, उसी तरह मेरा तुम्हारे साथ प्यार भी बढ़ता रहता है ।"

"एक करोड़ यानी सौ लाख हर वर्ष!" पिंकी फिर चौंक गई । बोली, "दादाजी, तभी बिहारमें अकाल पड़ गया है न?"

दादाजी इस समय अकालकी बात करनेके मूड-में नहीं थे । गाड़ी पटरीसे उतरती दीख रही थी । उन्हें समझमें नहीं आता था, कैसे बात करें? बोले, "तो, पिंकी बिटिया, जितना तुम सोचती हो, मैं उससे भी पचास करोड़ बटे दस हजार—चार जीरोसे चार जीरो कट गए, ऊपर बचे जीरो, जीरो, जीरो, जीरो और पांच यानी—पचास हजार, हां तो, पिंकी, जितना तुम सोचती हो, मैं उससे भी पचास हजार गुना तुम्हें अधिक प्यार करता हूं । तुम जानती हो, हमारे देशमें तीस करोड़ लोग तो वोट देनेके काबिल यानी इक्कीस वर्षसे ऊपर हैं । वोट देते समय हमें किसी का भी पक्षपात नहीं करना चाहिए । समझी ?"

पिंकीकी समझमें नहीं आ रहा था कि बात कहांसे कहां पहुंच गई । वह चुप रही । दादाजी कहते गए—"वोटका मतलब है राय । हमें अपनी राय सोच-समझकर देनी चाहिए । तुमने कबीर दासजीका वह दोहा तो सुना ही होगा—रहिमन वे नर मर गए. . .!"

उसपर पिंकी हंसने लगी । दादाजीने अंधेरे में उसे घूरा, तो वह सहमकर बोली, "दादाजी, एक तरफ आप कहते हैं कबीरका दोहा, फिर बोलते हैं—रहिमन वे नर मर गए. . .एक ही दोहेको कबीर और रहीम दोनोंने कैसे लिखा?"

"भाड़में गए कबीर और रहीम दोनों!" झल्लाकर दादाजी बोले, "जो मैं पूछूं, उसपर अपनी ठीक ठीक राय देती चलना ।"

"अच्छा, दादाजी!"

"मैं राजू और मुन्नूको पढ़नेको कहता हूं, तो कुछ बुरा कहता हूं?"

"नहीं, दादाजी ।"

"राजू और मुन्नू बिगड़े हुए हैं या नहीं?"

"बहुत बिगड़े हुए हैं, दादाजी ।"

"राइट! अब यह बताओ कि उन्हें सुधारना हमारा कर्त्तव्य है या नहीं? हमारा कोई अंग खराब हो जाए, तो क्या हम उसे काटकर अलग फेंक देंगे? नहीं, उसका इलाज करेंगे ।"

"आप ठीक कहते हैं, दादाजी ।"

"वे कम्बख्त मेरी बात सुनते ही नहीं । यदि तुम मेरी हां में हां मिलाओ, तो वे पांच मिनिटमें सुधर सकते हैं । बच्चा हमेशा बराबरवालोंसे सीखता है ।"

पिंकी कुछ सोचने लगी, तो दादाजीको लगा कि इस ढंगसे बात करनेमें उनकी प्रतिष्ठा कम हो गई है । वह बोले, "यों मैं चाहूं, तो डंडे-का इस्तेमाल भी कर सकता हूं, पर काम वही ठीक होता है जो बच्चे अपने दिलसे करें ।"

"ठीक है, दादाजी । आप जो बात कहेंगे, मैं वैसा ही कहूंगी ।" पिंकीने कहा । फिर धीरेसे बोली, "यदि वह बात ठीक है, तो!"

"शाबाश! अब हम कल ही उनकी खबर लेंगे," दादाजी बिस्तरसे उछलकर बोले ।

दादाजीका यह वाक्य तोपके गोलेकी तरह राजू और मुन्नूके कानोंमें पड़ा । राजूने घबराकर कहा, "मर गए! पिंकीने कोई भंडा फोड़ दिया!"

"अच्छा, दादाजी, अब मैं सोने जाऊं?" उधर पिंकीने दादाजीसे पूछा ।

"अरी पिंकी, इतना बड़ा पलंग है । आज यहीं सो जाओ ।" कहते हुए दादाजी पलंगपर एक ओरको हो गए ।

पिंकी मान गई । कुछ देर बाद दादाजीके खर्राटे गूंजने लगे । तभी पिंकीने उन्हें जगाया । बोली, "दादाजी, प्यास लगी है । एक गिलास पानी ला दीजिए ।"

"अरे, इसमें जगानेकी क्या बात है! अंदर जाओ । ताकपरसे गिलास उठाकर सुराहीसे पानी भर लो ।"

"दादाजी, डर लगता है । अंदर भूत बैठा होगा ।"

"बेटी, आधी रातको पानी नहीं पीते, सुबह पीना!"

दादाजीने उनींदे स्वरमें कहा ।

"दादाजी, आधी रात है, तो आधा गिलास पानी ही ला दीजिए! बहुत प्यास लगी है ।"

हारकर दादाजी उठे । बत्ती जलाकर अंदरसे पानीका गिलास भर लाए और पिंकीको पकड़ा-कर फिर सो गए । पिंकीने एकाध घूंट पानी पिया और गिलास नीचे रख दिया ।

दादाजी पांच-दस मिनिट और सोए होंगे कि उनकी फिर नींद खुल गई । देखा कि पिंकीने अपनी दोनों टांगें उनके पेटपर डाल रखी हैं, जैसे नक्कारेको बजानेके लिए उसके ऊपर दो चोब रखी रहती हैं ।

"राम तेरा भला करे!" कहते हुए दादाजीने उसकी टांगें परे कर दीं । पर पिंकीकी टांगोंमें जैसे स्प्रिंग लगी थी, दो मिनिट बाद टांगें फिर दादाजीके पेटपर आ टिकीं । इस बार दादाजीने बड़ी निर्ममतासे टांगें परे पटकीं और फिर सो गए । कुछ मिनिटके बाद पिंकीने उन्हें फिर जगाया ।

"दादाजी! दादाजी!!"

"क्या है?"

"सारी चादर तो आप अपने ऊपर ले गए । मुझे मच्छर काटते हैं ।"

दादाजीने आधीसे भी अधिक चादर पहले ही छोड़ रखी थी । बाहर-तेरह सेंटीमीटर और छोड़ दी । उन्हें लगा कि इस बार सोना मिल जाएगा । पर पिंकी पूछ बैठी, "दादाजी, हमारे देशमें मच्छर अधिक हैं या आदमी?"

"भई, आदमी पचास करोड़ हैं; मच्छर इतने कहां होंगे?"

"फिर, दादाजी एक एक आदमीको हजारों

(शेष पृष्ठ ५० पर)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"गणतंत्र दिवसपर मंत्रीजीने अज्ञानमें सोई जनताको उठानेके लिए कैसा ललकारा!"

"हो, यार, राजाका भाषण था! अपनको तो सुनते सुनते हरे नींद आ गई थी!"

Scanned by CamScanner

एक वोट की कसर (पृष्ठ २७ से आगे)

मच्छर कैसे घेर लेते हैं?"

"पता नहीं!" दादाजी डपटकर बोले, "ये बातें सुबह पूछना।"

दादाजीने मन ही मन निश्चय किया कि वह अबसे भूलकर भी किसी बच्चेको साथ नहीं सुलाएंगे। उसके बाद पिंकी सो गई, इसलिए दादाजीको भी सोना मिल गया। अगले दिन दादाजी देरसे उठे। सुबहके सारे कार्यक्रम गड़बड़ हो गए, पर उन्हें संतोष था कि अब वह राजू और मुन्नूपर पूरा पूरा रोब डाल सकेंगे।

उस दिन रविवार था। दादाजी सूर्य भगवान-को नमस्कार करने पानीका लोटा लेकर छत-पर गए। मौका देखकर राजू और मुन्नूने बैट उठाया और खिसकने लगे। दादाजीने उन्हें इतनी सुबह खेलते जाते देखा, तो झटापटीमें लोटेका पानी पश्चिमकी ओर पड़ोसकी छतपर फेंककर एक्सप्रेसके इंजनकी तरह धड़धड़ाते नीचे उतर आए और दोनों बच्चोंकी राह रोककर खड़े हो गए। "राजू! यह बैट कब खरीदा?" राजूके हाथमें नया चमचमाता बैट देखकर दादाजीने पूछा।

"दादाजी, यह बैट हमारा नहीं है," राजूने शांत स्वरमें उत्तर दिया।

"देखें," कहते हुए दादाजीने आगे बढ़कर बैट राजूके हाथसे छीन लिया। यह उन दोनोंका दुर्भाग्य था कि उन्होंने बैटके हैंडलपर लिख दिया था—'यह बैट राजू-मुन्नू, निवासी—देवनगर, नई दिल्लीकी सम्पत्ति है। जिस किसी सज्जनको यह कहीं पड़ा मिले, उससे सविनय निवेदन है कि वापस मालिकों तक पहुंचानेका प्रयत्न करें।"

दादाजीने यह पढ़ा और गरजे, "झूठ बोलते हो। शर्म नहीं आती तुम्हें!"

यह गर्जना सुनकर पिंकी बाहर निकल आई। आजसे पिंकी दादाजीके साथ थी, इसलिए उनका हौसला चौगुना हो गया। राजू-मुन्नूके चेहरे मुरझा गए। सामने वाली गलीकी क्रिकेट-टीमसे उनका मैच था। इधर यह आफत सिरपर आ पड़ी थी।

"तुम लोगोंने बैटके लिए पैसे किससे लिये?" दादाजीने दहाड़कर पूछा। उन्हें संदेह हो गया था कि राजू या मुन्नूने डैडी या मम्मीकी जेबपर हाथ साफ किया होगा।

"जेब-खर्चमें से पैसे बचाए हैं," मुन्नूने कहा। दादाजी चुप हो गए। यह बात उनकी कल्पनासे परे थी कि राजू-मुन्नू पैसे भी बचा सकते हैं। कुछ देर बाद उन्होंने नया गोला दागा, "आखिर तुम लोग क्रिकेट खेलते क्यों हो?"

"स्वास्थ्य बनानेके लिए," मुन्नूने कहा।

"स्वास्थ्य बनानेके लिए!" दादाजी यों उछले जैसे बिच्छूने काट खाया हो, "क्रिकेटसे स्वास्थ्य बनता है? दिन भर धूपमें भागते फिरनेसे स्वास्थ्य बनता है? क्यों, पिंकी, तुम क्या कहती हो?"

"दादाजी, वैसे कल आपने ही कहा था कि आजकल धूप सेंकना लाभदायक होता है!" पिंकीने धीरेसे कहा।

दादाजीको इस प्रतिवादकी आशा न थी। पर बिना डगमगाए वह बोले, "अरे, धूप सेंकने और धूपमें दौड़नेका फर्क तुम नहीं समझती? कमाल है! फिर धूपमें क्रिकेट! राम. . .राम! एक गेंदके पीछे अच्छे भले आदमी उल्लू बने दौड़ रहे हैं। क्रिकेट बाइस मूर्खोंका खेल है—ए गेम आफ ट्वंटी-टू फूल्ज़! समझी?"

"दादाजी, क्रिकेट देखने वाले तो फिर और भी बड़े मूर्ख होंगे?" पिंकीने किसी वकील-की तरह बहस की।

"बिल्कुल!" दादाजी मान गए।

"मैं अभी आई," कहते हुए पिंकी अंदर दौड़ी और कुछ ही देर बाद घरकी तस्वीरोंका अलबम ले आई। उसमें दो साल पहले डैडीकी खींची हुई एक फोटो थी। इस फोटोमें राजू बैट संभाले विकटोंके आगे खड़ा है और दादाजी पास खड़े मुस्करा रहे हैं। दादाजी अलबम देखते हुए इस फोटोपर आकर कहा करते थे—"भई, इसमें तो मेरा 'पोज' बहुत ही अच्छा आया है!"

अलबम देखते ही दादाजीको अपनी वह फोटो याद आ गई। वह दौड़कर पिंकीकी ओर बढ़ आए। अलबम उसके हाथसे छीनकर बोले, "अरे, क्या करती है? रात तूने क्या कहा था?"

"क्या, दादाजी?"

"इतनी जल्दी भूल गई। रात भर मैं तेरी लातें सहता रहा। सब यूं ही गया!" दुखी होकर दादाजी बोले।

"दंड नहीं, इंसपेक्टर साहब, यह तो विद्यार्थियों को अनुभव प्रणालीसे 'भारत में मुर्गी-पालन नामक' पाठ याद कराया जा रहा है!"
व्यंगकार: नंदलाल शर्मा

पास आकर राजू और मुन्नूने यह सुन लिया और लगे तालियां बजाने, "आहा जी, पिंकीने दादाजीके लातें मारीं!"

दादाजी इस नई स्थितिका सामना करने-की कुछ तरकीब निकाल ही रहे थे कि तभी पड़ोसकी मधु आकर बोली, "दादाजी, मां कहती हैं, सूर्यको नमस्कार करनेके लिए पानी पूर्वकी ओर फेंकना चाहिए। आपने सारा पानी हमारी छतपर उंड़ेल दिया। सारे कोयले भीग गए।"

"राम तेरा भला करे! सारी दुनिया ही मेरे खिलाफ है। मैं एक एक को देख लूंगा!" दादाने किसी चुनावमें हारे हुए नेताकी तरह कहा और अब तक बगलमें दबाया बैट वहीं पटक-कर अंदर घुस गए।

राजू और मुन्नूने बैट उठाया और बड़ी शानसे गलीमें निकल गए। ●

९।६७०३ देवनगर, नई दिल्ली–५

भोलू भाई की भूल-भुलैया – 3 (पृष्ठ ३५ से आगे)

क्या तुम बता सकते हो कि छह गोलियोंको भोलूने किस क्रमसे फ़नल नंबर ३ में रखा था?

फ़नल नं. ४

मंचू सम्राट बड़ा झक्की था। यह देखकर कि अब तक सिर्फ एक ही कैदी मरा है और बाकी सब बचे जा रहे हैं, उसने चौथी और अंतिम बार फ़नल नं. ३ को फनल नं. ४ का नाम देते हुए चार, पांच और छह अक्षरोंके नामों वाले कैदियोंको सामने आनेको कहा। फलस्वरूप भोलू भाई, चाऊमाऊची, और एक नया कैदी बचाऊमाऊची सामने आए।

मतलब यह कि इस बार भी तीनों भोलू भाईकी हिसाबी करामातसे बच निकले। मंचू सम्राटने जब यह देखा कि भारतीय कैदी हर बार बच निकलता है और दूसरोंको भी बचा लेता है, तो उसने गुस्सेमें आकर तीनों फ़नल बीच दरबार पटककर फोड़ डाले। फिर उसने आज्ञा दी कि भोलू भाईको (दंत-कथाके अनुसार) हिमालयकी चोटीसे नीचे लुढ़का दिया जाए।

हिमालयकी चोटीपर तो खैर चीनियोंसे क्या चढ़ा जाता, मगर एक निचली चोटीसे उन्होंने भोलू भाईको भारतकी तरफ फेंक दिया। काफ़ी चोट लगी, क्योंकि भोलू भाई जब खाट परसे नीचे गिरे, तो सारा सपना हवा हो गया।

(बच्चो, तीनों फ़नलोंकी पहेलियोंके उत्तर १५ जनवरी तक हमारे पास भेज दो। पता लिख लो: 'भोलू भाई की भूलभुलैया नं. ३', पराग, पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१।)

Scanned by CamScanner